सबसे अधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र के लिए एक मार्ग

इस दशक के अंत तक विश्व की जनसंख्या 8.5 बिलियन तक पहुँचने की उम्मीद है। जहाँ एशिया में अधिक जनसंख्या होने की उम्मीद है, वहीं यूरोप में, ऐसा कहा जाता है, कम जनसंख्या होगी। प्रजनन स्तर में गिरावट और बढ़ती दीर्घायु के कारण, भविष्य की आबादी में वृद्ध लोगों की संख्या और हिस्सेदारी अधिक हो सकती है। इस प्रकार, दो महत्वपूर्ण परिवर्तन होने की उम्मीद है - क्षेत्रों में जनसंख्या का असंतुलित वितरण और विषम आयु संरचना।

आज की आबादी शहरी इलाकों में ज्यादा केंद्रित है। अनुमान है कि 2030 तक दो-तिहाई लोग शहरी इलाकों में रहेंगे, जिससे बुनियादी ढांचे और सुविधाओं पर दबाव पड़ेगा। इससे शहरी नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता पर असर पड़ सकता है।

महिलाओं का स्वास्थ्य और अधिकार

इस विश्व जनसंख्या दिवस का विषय 'महिलाओं का यौन और प्रजनन स्वास्थ्य तथा प्रजनन अधिकार' है, जो जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICPD) की 30वीं वर्षगांठ का प्रतीक है। यह हमें ICPD के कार्य कार्यक्रम को साकार करने के प्रयासों में तेजी लाने का अवसर देता है। जबकि तीन दशकों में उचित प्रगति हुई है - आज महिलाओं के पास आधुनिक गर्भनिरोधकों तक अधिक पहुंच है और 2000 के बाद से मातृ मृत्यु दर में काफी कमी आई है - फिर भी विभिन्न क्षेत्रों में असमान परिणाम हैं। यह अस्वीकार्य है कि हर दिन, गर्भावस्था और प्रसव से संबंधित रोकथाम योग्य कारणों से दुनिया भर में 800 महिलाओं की मृत्यु हो जाती है। इन मौतों का एक बड़ा हिस्सा विकासशील देशों में होता है। मातृ मृत्यु दर में कमी को प्रजनन क्षमता में कमी के साथ जोड़ा जाना चाहिए क्योंकि कम प्रजनन क्षमता मातृत्व जोखिम को कम करती है। हालांकि, प्रजनन क्षमता में कमी महिलाओं में देरी से बच्चे पैदा करने से भी जुड़ी है।

विश्व जनसंख्या दिवस का भारत के लिए स्पष्ट महत्व है। 28 वर्ष की औसत आयु वाला दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश जनसंख्या-घाटे वाले क्षेत्रों को संतुलित करने में मदद कर सकता है। प्रजनन स्तर में कमी और बढ़ती दीर्घायु भी घरों के आकार और संरचना को बदल देती है। जल्द ही घरों में बच्चों और बुजुर्गों का असमान वितरण होगा, जिसका असर असमानता पर पड़ेगा, जो भारत के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। उदाहरण के लिए, केरल प्रवास सर्वेक्षण 2023 की रिपोर्ट बताती है कि 42% घरों में कोई बुजुर्ग नहीं है, जबकि 37% घरों में एक बुजुर्ग, 20% में दो और 1% में तीन बुजुर्ग हैं।

अमीर और गरीब परिवारों में बुजुर्ग लोगों और बच्चों के रहने की व्यवस्था असमान है। इससे अमीर परिवारों में निर्भरता का बोझ (कामकाजी उम्र की आबादी में आश्रित युवा और बुजुर्गों का अनुपात) कम होता है, जबकि गरीब परिवारों में यह कम होता है। इसके अलावा, घरों में देखभाल का बोझ बच्चों और बुजुर्गों की मौजूदगी से भी प्रभावित होता है। सामाजिक रूढ़िवादिता के कारण, देखभाल का बोझ महिलाओं पर पड़ता है। इससे महिलाओं के पास वेतन वाले काम में भाग लेने के लिए कम समय बचता है।

प्रवासन रुझान

भविष्य में जनसंख्या का वितरण प्रवासन द्वारा निर्धारित होता रहेगा। हाल के दशकों में, हमने लोगों की अधिक गतिशीलता देखी है। लोग अक्सर अपने क्षेत्रों में खराब विकास और बुनियादी ढांचे के कारण पलायन करते हैं। एक अध्ययन का अनुमान है कि 60 करोड़ भारतीय हर साल देश के भीतर और 2 करोड़ विदेश में पलायन करते हैं। भारत के भविष्य के शहरीकरण की क्षमता को देखते हुए, मौजूदा मेगा शहरों पर दबाव कम करने के लिए नए शहरों के उद्भव को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है। इनमें मेगा शहरों के समान ही बुनियादी ढाँचा और सार्वजनिक सुविधाएँ होनी चाहिए। हम स्मार्ट शहरों की बात करते हैं, लेकिन क्या भारतीय शहर 'स्मार्ट' हैं?

यह स्पष्ट है कि शहर वैश्विक अर्थव्यवस्था के चालक हैं। वर्तमान में, 600 शहरी केंद्र दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद का 60% चलाते हैं। ऑक्सफोर्ड इकोनॉमिक्स द्वारा वैश्विक शहरों के मूल्यांकन के परिणामस्वरूप ग्लोबल सिटीज इंडेक्स तैयार हुआ, जिसने पाँच श्रेणियों के आधार पर दुनिया के शीर्ष शहरों को रैंक किया: अर्थशास्त्र, मानव पूंजी, जीवन की गुणवत्ता, पर्यावरण और शासन। यह अभ्यास शहरी जीवन की गुणवत्ता का मूल्यांकन करता है, जिसका अध्ययन करने की आवश्यकता है ताकि तेजी से शहरीकरण और बढ़ते प्रवास के रुझानों को समझा जा सके।

दुर्भाग्य से, दुनिया के शीर्ष 50 शहरों की रैंकिंग में एक भी भारतीय शहर शामिल नहीं है। सबसे अच्छी रैंकिंग वाला भारतीय शहर दिल्ली है, जो दुनिया के 1,000 शहरों में से 350वें स्थान पर है। यह खराब प्रदर्शन भारत के खराब पर्यावरण और जीवन की गुणवत्ता के कारण है, जो निस्संदेह इसके शहरों की स्थिरता को खतरे में डालता है। भारत के शहरी क्षेत्रों को रहने योग्य बनाने के लिए, हमें इन सभी चुनौतियों का समाधान करना होगा।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देश के पास अपनी जनसंख्या की वास्तविक गणना नहीं है। भारत की जनसंख्या के अधिकांश अनुमान दशकों पुराने डेटा पर आधारित हैं। जब तक भारत अपनी जनगणना नहीं कर लेता, तब तक हमारे पास केवल अनुमान ही होंगे। सटीक गणना और जनसांख्यिकी संरचना जानना महत्वपूर्ण है ताकि हम बेहतर नीतियां तैयार कर सकें।

विश्व जनसंख्या दिवस भारत के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारा वैश्विक प्रभाव है। अधिक देशों द्वारा कठोर आव्रजन नीतियों को अपनाने के बावजूद, कम से कम निकट भविष्य में अधिक भारतीय प्रवास करना जारी रखेंगे। साथ ही, भारत को अपने कार्यबल को वैश्विक श्रम बाजार के लिए गंभीरता से तैयार करने की आवश्यकता है। कहा जाता है कि 21वीं सदी भारत की है। लेकिन यह कथन तभी मान्य होगा जब भारत अपने कार्यबल को विकसित वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करेगा। दुनिया को हम पर उतना ही भरोसा करना चाहिए जितना हम खुद पर करते हैं।

प्रारंभिक परीक्षा के संभावित प्रश्न (Prelims Expected Question)

प्रश्न : निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-

1. प्रति वर्ष 23 विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई को मनाया जाता है।
2. वर्ष 2024 के विश्व जनसंख्या दिवस का विषय 'महिलाओं का यौन और प्रजनन स्वास्थ्य तथा प्रजनन अधिकार' है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

Que. Consider the following statements-

1. Every year 23 World Population Day is celebrated on 11 July.
2. The theme of World Population Day for the year 2024 is 'women's sexual and reproductive health and reproductive rights'.

Which of the statements given above is/are correct?

(a) Only 1 (b) Only 2
(c) Both 1 & 2 (d) Neither 1 nor 2

उत्तर : C

मुख्य परीक्षा के संभावित प्रश्न व प्रारूप (Mains Expected Question & Format)

प्रश्न: 'भारत के भविष्य के शहरीकरण की क्षमता को देखते हुए, मौजूदा मेगा शहरों पर दबाव कम करने के लिए नए शहरों के उद्भव को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है।' इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर का दृष्टिकोण :

- उत्तर के पहले भाग में भारत के शहरीकरण की वर्तमान स्थिति की संक्षिप्त चर्चा कीजिए।
- दूसरे भाग में भारत के भविष्य के शहरीकरण की क्षमता और मौजूदा मेगा शहरों पर दबाव कम करने के लिए नए शहरों के उद्भव के महत्व की चर्चा करें।
- अंत में आगे की राह दिखाते हुए निष्कर्ष दें।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।